मूल्य: ₹ 25/-

ISSN-2231-1602

आपका तिस्ता-हिमालय

हिन्दी मासिक

वर्ष : 11, अंक : 109/110, दिसम्बर-2019

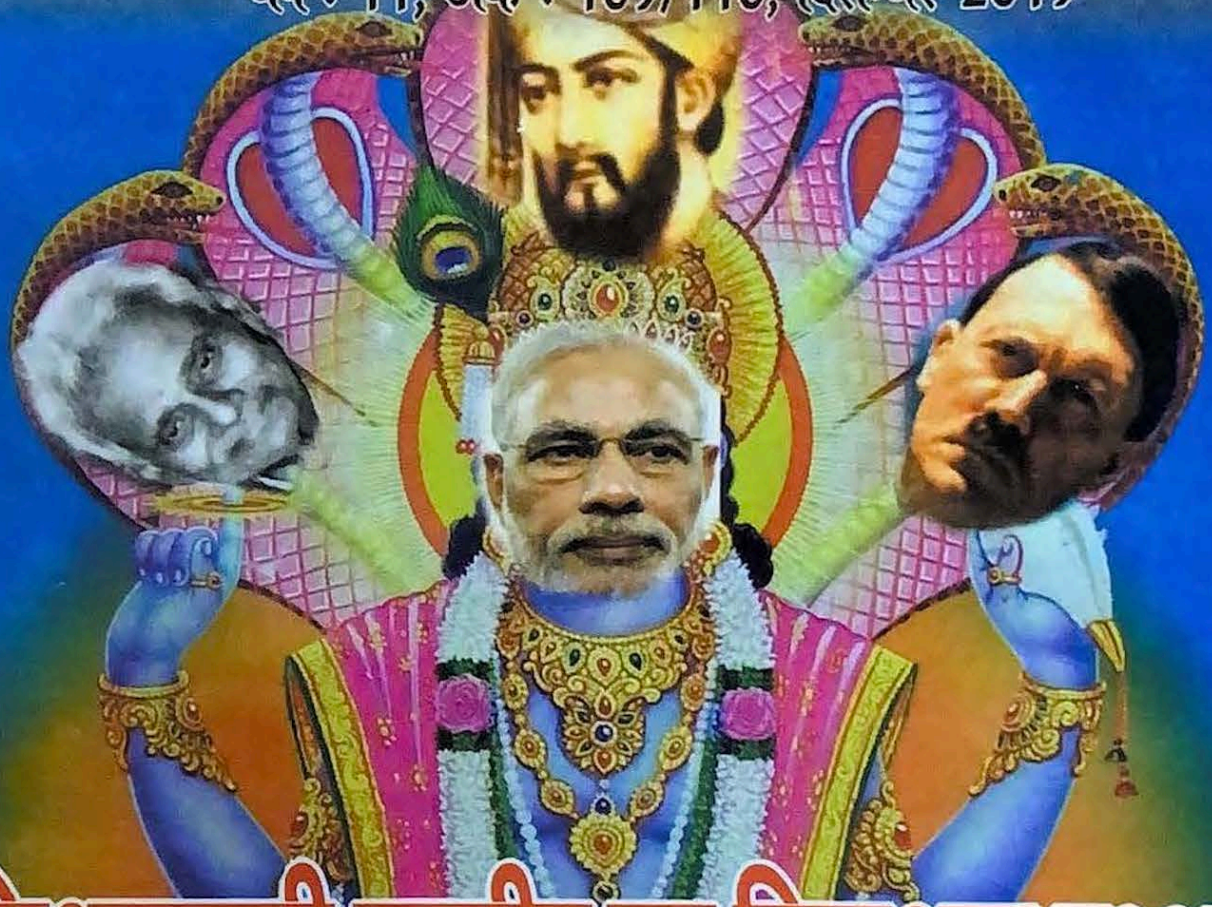

"मिथ्यावादी फ़क़ीर का विलक्षण दम्भ"

राष्ट्र के माथे पर मोदीजी के मिथ्याचरणों का चंदन !

वर्षः 11, अंकः 109/110, दिसम्बर-2019

संपादकीय: मिथ्यावादी फ़क़ीर का विलक्षण दम्भ..........05
नागरिकता का आंदोलन बनाम भारतीय संविधान..........08
'कश्मीरनामा' अर्थात् कश्मीरी मानस के निर्माण की प्रक्रिया एवं दिशा......09
370 के बाद का कश्मीर: झूठ और दुष्प्रचार की अति..........11
इतिहास की पुनर्व्याख्या करने की कोशिश..........12
स्त्री अस्मिता के सवाल..........14
हिन्दी का विकास अनिवार्य है लेकिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा..........18
जेएनयूएसयू भूतपूर्व अध्यक्षों के सम्मेलन में दिया भाषण-..........20
धारावाहिक उपन्यास: जीवन-यात्रा..........22
जय चक्रवर्ती के नवगीत 23
कहानी: संचय..........24
जनमानस के लिये विज्ञान..........27
धरती पर जीवन..........28

दिसम्बर-2019
मासिक
मूल्य: 25/-(पच्चीस रुपये)

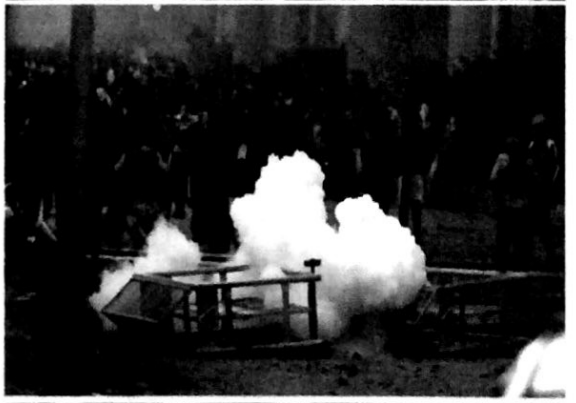

स्वामी/प्रकाशक एवं मुद्रक रंजू सिंह द्वारा मुक्तधारा प्रेस एंड पब्लिकेशन्स के लिए मुक्तधारा प्रेस , अपर रोड, गुरुंगनगर,
पो. प्रधाननगर, सिलीगुड़ी-3, जिला दार्जिलिंग (प.बं.)
से मुद्रित एवं 'अमरावती' अपर रोड गुरुंगनगर, पो. प्रधाननगर,
जिला- दार्जिलिंग (प.बं.) से प्रकाशित, संपादक: डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह
मो: 094340-48163
email : mag.himalayprahari@gmail.com
muktadhara2006@rediffmail.com
Website : www.teestahimalaya.org
RNI No. WBHIN/2010/34186

विज्ञापन विभाग:
ओझा मेंशन, प्रथम तल, हिलकार्ट रोड, सिलीगुड़ी-1, जिला: दार्जिलिंग, प.बं.,
ब्यूरो चीफ : डॉ. डी.आर. नकीपुरिया, 5/6 आईएनएस भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली-1

प्रबंधन: प्रदीप केडिया, सिलीगुड़ी

कानूनी सलाहकार: ओम प्रकाश शर्मा, सिलीगुड़ी / सुदीप कुमार, कोलकाता /
राज राजेश्वर सिन्हा, 57-स्कूल रोड, पूर्व पुटीआरी, ग्राउण्ड फ्लोर, कोलकाता-700093

लेखा-निरीक्षक: राज कुमार बिहानी

संपादकीय प्रभारी: शैलेन्द्र चौहान, 34/242, सेक्टर-3, प्रतापनगर, जयपुर-302033, राजस्थान

क्षेत्रीय प्रतिनिधि: शेख मोहम्मद बनिहाल, डोडा, जम्मू-कश्मीर
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ. सत्यभामा आड़िल, शंकर नगर, छत्तीसगढ़, रायपुर,।
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ. मूलचंद गौतम, शक्तिनगर, चंदौसी, मुरादाबाद-202412, उत्तर प्रदेश।
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: प्रो. मोहन सपरा, इ.जी.-1083, गोबिन्दगढ़, एसडी कॉलेज रोड, जालंधर, पंजाब।
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: सुरेश सेन निशांत, गांव सलाह, डॉ. सुन्दर नगर-1, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश-174401.
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: गौतम सिन्हा, सिक्किम
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: आलोक शर्मा 'प्रवीण', सिलीगुड़ी
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ.देवेन्द्र प्रसाद सिंह, सासाराम-821115, बिहार
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ. चेतना राजपूत, डी-8, 44/3, अर्मामेंट कॉलोनी, गणेशखिंड, पुणे-411007
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ. सत्य प्रकाश तिवारी, 83-ए कोशिपुर रोड, ओम रेसिडेंसि, बी.एल.-3, फ्लाट-3ए, कोलकाता-700002
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: विक्रम सिंह, उत्तराखंड, मो: 090122-75039
स्वास्थ्य संपादक: डॉ. रंजु नकीपुरिया, नई दिल्ली 7838011230

डिजाईन: कमल प्रसाद चौहान

- पत्रिका से संबंधित सभी तरह के विवाद सिलीगुड़ी न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।
- रचनाओं में व्यक्त किये गये विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

"मिथ्यावादी फ़क़ीर का विलक्षण दम्भ" राष्ट्र के माथे पर मोदीजी के मिथ्याचरणों का चंदन !

झूठ-फ़रेब के अनेक फायदे हैं। धूर्तता भी बहुत काम की चीज़ है। और ठगी का कहना ही क्या! इनके साथ सनकीपन और मूर्खता अगर जुड़ जायं तो फ़िर सोना पर सुहागा! देश के प्रधानमंत्री पर हमें फख्र है। एक साधारण -सा फ़क़ीर और उसके भीतर इतने सारे दुर्लभ गुणों का अद्भुत समावेश! महान देश के महान प्रधानमंत्री जब अपने 'मन की बात' करते हैं तब उनके झूठ का सुवास भक्तों के अन्तस-गह्वर में अनायास ही उतर जाता है। सचमुच कितना दिलचस्प है माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दिलचस्प झूठ! '... मित्रो, देश के युवा ही देश का भविष्य है। आप मेरे विरोधियों के बहकाये में न आयें...!' '...मैं जरा कहना चाहता हूं मेरे फर्स्ट टाइम वोटरों को,क्या आपका पहला वोट पाकिस्तान के बालाकोट में स्ट्राइक करने वाले वीर जवानों के नाम हो सकता है क्या? ...लेकिन मैंने कहा, इतना क्लाउड है,बारिश हो रही है तो वे रॉडार से बच सकते हैं...?'।'... हम जनता के कामों में लगे रहते हैं।... मेरे शरीर पर कोई भी ऐसी चीज़ नहीं मिलेगी जिससे सादगी न झलकती हो। मैं कभी मंहगे कपड़े नहीं पहनता।' ' पहली बात तो यह है कि मैं कोई ख़ास पढ़ा-लिखा नहीं हूं। लेकिन परमात्मा की कृपा है और उसके कारण नयी-नयी चीज़ों को जानने का मुझे बड़ा शौक है। ऐसे तो मैंने 17 साल की उम्र में घर छोड़ दिया। सिर्फ़ हाई स्कूल तक ही पढ़ाई की है।' ऐसे भी जो लोग महाज्ञानी होते हैं,उन्हें डिग्री की जरूरत नहीं पड़ती है। प्रधानमंत्री को भी डिग्री की ज़रूरत नहीं पड़ी। और जब ज़रूरत पड़ी तब ईश्वर कृपा से 10वीं पास स्मृति इरानी ने जुगाड़ कर दिया। मोदीजी के मिथ्या प्रवचनों से भक्त आत्मविभोर हैं। आज देश आह्लादित है! राष्ट्र के माथे पर मोदीजी के 'मिथ्याचरणों का चंदन' मानो पूर्णिमा का चाँद हो! इनकी शख़्सियत की तारीफ़ करनी ही पड़ेगी! जो शख़्स उनके अनमोल लफ़्ज़ों का मज़ाक उड़ा रहे, उन्हें मैं सावधान किये देता हूं, राष्ट्रद्रोही घोषित करता हूं! प्रधानमंत्री के अनमोल झूठ के प्रति मेरे हृदय में भी भक्तिभाव का उदय हो चुका है। चूंकि मैं भक्तों की टोली का अब अनमोल रत्न बन चुका हूं, इसलिए मेरे भीतर राष्ट्रप्रेम का जज़्बा है! मेरा राष्ट्रप्रेम उफान पर है। आक़ा का हुक्म मेरे सिर। मेरे हर कृत्य में यह स्वतः प्रकट हो रहा है। महान राष्ट्र के प्रति मेरे समर्पण को आप देखकर यह अनुमान सहज ही लगा सकते हैं। जिन्होंने 'भारत माता की जय' नहीं कहा, उनके सिर फोड़े,जिन्होंने 'जय श्रीराम' नहीं कहा, उनके सिर कुचल दिये। और जिन मुसलमानों को गायों के साथ देखा,उन्हें ख़त्म कर डाला। धर्म के नाम पर शहर में दंगे फैलाये,नस्लीय विद्वेष के ज़हरीले बीज़ बोये। खून-ख़राबा,दंगा-फ़साद में बढ़चढ़ भाग लिया। अपने राम के नाम...। जयश्री राम। देश का यह उत्तम प्राराब्ध है जो एक फ़रेबी फ़क़ीर को परवर दीगार ने अपना दूत बनाकर हमारे बीच भेजा है। भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए सिर्फ़ एक बार क्यों,अगर ज़रूरत पड़ी तो प्रधानमंत्री हजार बार झूठ बोलेंगे। सिर्फ़ एक बार क्यों, वह,बार-बार बालाकोट दोहरायेंगे। बार-बार पुलवामा में विस्फोट करवायेंगे। बार-बार देश के मुसलमानों को सबक सिखायेंगे। विद्यार्थियों को उनकी औक़ात समझायेंगे। बार-बार अपनी नस्लीय राजनीति का दिव्य दर्शन देश को करवायेंगे। बार-बार...। हिन्दुत्व के विस्तार के लिए,धर्म की स्थापना के लिए ये सब ज़रूरी टास्क हैं, जो उन्हें पूरा करने हैं। कुछ जवान अगर मरते हैं तो मरें,दरअसल वे मरने के लिए ही तो सेना में भर्ती होते हैं। प्रधानमंत्री का यह मानना है,'जवान से ज़्यादा रिस्क बनिया-व्यापारी लेते हैं।' इसलिए उन्होंने घोषणा कर दी है कि पुलवामा के मृत जवानों को न शहीद माना जायेगा न ही उन्हें पेंशन मिलेगा। जब देश के लिए रिस्क लेते हैं बनिया-व्यापारी तो प्रधानमंत्री को उनके लिए ही अधिक चिंता करनी चाहिए। हम भक्तों के बारे में तो वह पहले से ही संजीदा हैं। उदार हैं। सत्ता में बने रहने के लिए बहुत बार झूठ का सहारा लेना पड़ता है। महान कार्य के लिए महान झूठ का सहारा जाहिर है महाभारत की जंग में धर्मराज युधिष्ठिर को भी अपना राजधर्म निभाते हुए लेना पड़ा था, ''अश्वत्थामा हतः इति नरो वा कुंजरो वा...!'' अगर वह झूठ का सहारा न लेते तो द्रोणाचार्य का बध कभी नहीं होता। खुद कृष्ण ने कहा था कि धर्म की स्थापना के लिए युद्ध जीतना ज़रूरी है। और युद्ध जीतने के लिए छल-छद्म और झूठ का सहारा लिया जाना भी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके सिपहसलार गृहमंत्री अमित शाह का मानना है कि देश की धरती पर हिन्दुओं को सबसे अधिक ख़तरा मुसलमानों और अनिश्वरवादियों अर्थात् कम्युनिस्टों से है। चूंकि मुसलमान बाहर से आये हुए हैं और कम्युनिस्ट इंसानियत की बात करते हैं। गरीबों-मज़लूमों के हक़-हुकूक़ का सवाल उठाते रहते हैं। किसान-मजदूरों के लिए आंदोलन करते हैं। विद्यार्थियों और युवकों को सत्ता के ख़िलाफ़ बगावत के लिए उकसाते हैं। एनआरसी, सीएए और एनपीआर को लेकर आंदोलन कर रहे हैं। इन सबको सबक सीखाने का वक़्त अब आ गया है। इनके नाश के लिए ही किल्विष का पदार्पण हुआ है। हिन्दुत्व के सात्विक स्वरूप को किल्विष ही बचायेगा। प्रधानमंत्री पर जो लोग फब्ती कस रहे, हर घटना पर मोदी जी के खिलाफ़ चीख़-चिल्ला रहे उनका अंत बहुत क़रीब है। अक्लमंदों को भला कौन समाझाये कि किसानों के भाग्य में अगर विधाता ने मौत लिख रखा है तो प्रधानमंत्री क्या कर सकते हैं! अक्लमंदों से भी राष्ट्र को भारी ख़तरा है। कारण कि वे सिर्फ़ विरोध करना जानते हैं। दरअसल वे विधाता पर यक़ीन नहीं करते हैं। कर्मफल को झुठलाते हैं। भाग्य पर भरोसा नहीं करते हैं। वे अपनी दुर्दशा के लिए अपने भाग्य को नहीं कोसते हैं, इसके लिए भी सरकार को ही दोषी ठहराते हैं। इसलिए मोदी जी इनके अंत के लिए हम भक्तों की मदद से ज़रूरी क़दम उठा रहे हैं- रामराज्य के विस्तार के लिए, हिन्दुत्व की स्थापना के लिए, मनुस्मृति को लागू करने के लिए। यह तो प्रधानमंत्री की अत्यंत सराहनीय पहल है जो वह मुसलमानों को हिन्दू बनाना चाहते हैं, इतिहास और संविधान को बदलना चाहते हैं और इसके लिए ही वह अपना एक-एक क़दम विकास की ओर बढ़ा रहे हैं। परवर दीगार ने इसके लिए ही फ़रेबी फ़क़ीर को भारत की पावन भूमि पर भेजा है। हम अपने परवर दीगार का भी शुक्रगुजार हैं और फ़क़ीर का भी। हालांकि फ़क़ीर खुद को चौकीदार कहता है। लेकिन उसके प्रवचन बिल्कुल फ़क़ीरों जैसे ही होते हैं। वह कभी सोता नहीं है। रात-दिन चौकीदारी करता है। देश के लिए काम करता है।

फक़ीर उर्फ चौकीदार की ख़ासियत जग जाहिर है। सच को 'झूठ' और झूठ को 'सच' बनाने का इल्म कोई फ़क़ीर से सीखे! आजकल हम भी भक्त-गिरोह में शामिल होकर यह इल्म सीख रहे हैं। फ़क़ीर का मानना है कि आदमी को हर फन में माहिर होना चाहिए। हम दावे के साथ कह सकते हैं, फ़क़ीर उर्फ़ चौकीदार कोई साधारण जीव नहीं है। वह दिव्यात्मा है! विष्णु अवतार!! गौतम बुद्ध को भी अंततः सनातनियों ने विष्णु अवतार माना कि नहीं! सनातनियों का मानना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी विष्णु अवतार ही हैं। यह तो परम योग है, और देश का सौभाग्य जो बहुत जल्द हिन्दुओं के मग़ज में ज्ञान का उदय हुआ और फ़रेबी फ़क़ीर उर्फ़ चौकीदार की असलियत के बारे में सब कुछ ज्ञात हो गया नहीं तो... ! गौतम बुद्ध ने अपने गृह और पत्नी का परित्याग किया और नरेंद्र मोदी ने भी। ज़रा ग़ौर करें कि इन दोनों में कितनी समानता और असमानता है! भक्त होने के नाते हमें लगता है कि गौतम बुद्ध से भी महान हमारा फ़क़ीर है। कारण कि गौतम बुद्ध राजभवन और पत्नी-पुत्र को छोड़ कर गये सो गये। फ़िर कभी उन्होंने संसार की ओर मुड़कर नहीं देखा। जाते वक़्त मार्ग में अपने कवच-कुडंल,स्वर्ण-आभूषण और राजसी वस्त्रों को उतार कर फेंक दिया। लेकिन फ़क़ीर ने अपने गृह और पत्नी को छोड़ने के बाद सीधे हिमालय गया और वहां कठिन तपस्या कर ज्ञान प्राप्त